सत्यमेव जयते

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE

अक्तूबर - दिसंबर 2025

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

न्यूज़लेटर

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) सामाजिक-सांस्कृतिक और जैव विविधता के वैज्ञानिक अध्ययन में भारत की अग्रणी राष्ट्रीय संस्था है। अपने प्रतिष्ठित अनुसंधानों और मानवविज्ञानिक अध्ययनों के माध्यम से यह देश के विविध समुदायों की समझ को समृद्ध करने के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

संदेश

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के त्रैमासिक न्यूज़लेटर के अक्तूबर-दिसम्बर अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व की अनुभूति हो रही है। कोलकता स्थित हमारे मुख्यालय से संचालित यह संस्थान न केवल भारत के नृवंशविज्ञान (ETHNOGRAPHY) का संरक्षक है, बल्कि आधुनिक मानव विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक शोध का एक प्रमुख केंद्र भी है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में जहाँ हर कुछ किलोमीटर पर भाषा, संस्कृति और आनुवंशिक संरचना बदल जाती है, हमारे संस्थान की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। सर्वेक्षण का उद्देश्य केवल ऐतिहासिक तथ्यों का संकलन करना नहीं है, बल्कि समकालीन समाज की जटिलताओं को समझना और उन चुनौतियों का समाधान ढूंढना भी है जिनका सामना हमारे वर्तमान जनजातीय समाज और ग्रामीण समुदाय कर रहे हैं।

पिछले कुछ महीनों में सर्वेक्षण द्वारा शोध और नवाचार की ओर कदम बढ़ाते हुए सर्वेक्षण ने कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर काम किया है जिनमें समकालीन राष्ट्रीय और क्षेत्रीय महत्त्व की परियोजनाओं में गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं प्रलेखन के साथ-साथ समुदायों का आनुवंशिक संरचना अध्ययन (GENOMIC RESEARCH) प्रमुख हैं I इसके साथ ही शोधार्थियों द्वारा देश की विलुप्त होती भाषाओं और लोक परंपराओं का डिजिटल संरक्षण का कार्य भी किया जा रहा है।

यह न्यूज़लेटर हमारे वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं के उसी कठिन परिश्रम का प्रतिफल है। इस अंक में आपको न केवल हमारी वर्त्तमान अनुसंधानिक कार्यों की झलक मिलेगी, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर सर्वेक्षण में चल रही अन्य गतिविधियों को भी जानने का मौका मिलेगा ।

हम डिजिटल युग में आगे बढ़ रहे हैं अतः हमें अपनी पारंपरिक शोध पद्धतियों को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ने की आवश्यकता है। हमारा लक्ष्य एक ऐसा समावेशी मंच तैयार करना है जहाँ ज्ञान का आदान-प्रदान सुलभ हो और हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी अपनी जड़ों से जुड़ी रहें।

इस अंक को तैयार करने में संलग्न सभी अनुसंधान कर्ताओं एवं संपादक दल को मैं धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह न्यूज़लेटर आपके लिए सूचनात्मक और विचारपूर्ण सिद्ध होगा।

प्रो.बी.वी.शर्मा, निदेशक

"विगत तिमाही में जारी अनुसंधान परियोजनाएँ एवं उनकी प्रगति रिपोर्ट "

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (ANSI) देश के अलग-अलग भूभागों में निवास करनेवाले विभिन्न समुदायों के जैव-सांस्कृतिक पहलुओं पर व्यापक अनुसंधान करने के अपने दायित्व को सक्रिय रूप से निभा रहा है। अपने निरंतर प्रयासों के अंतर्गत ANSI ने कई शोध परियोजनाएँ आरम्भ की हैं, जिनका उद्देश्य मानव संबंधी समस्याओं की सूक्ष्म समझ विकसित करना तथा स्थानीय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर नीतिगत हस्तक्षेपों को दिशा देना है।

इन परियोजनाओं में " एहसास(EHSAS)-स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ एवं सफल वृद्धावस्था की खोज", " कृषि पद्धतियों में परिवर्तन का ग्रामीण स्वास्थ्य पर प्रभाव: महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में एक अध्ययन", " भारत के पी.वी.टी.जी. के गट माइक्रोबियल जेनॉमिक्स का अध्ययन , " मानव अस्थियों के अध्ययन के आधार पर सिंधु–सरस्वती सभ्यता पर प्राचीन जलवायु के प्रभाव का पुनर्निर्माण", "स्थिर समस्थानिक तथा प्राचीन डीएनए का विश्लेषण" तथा " "जल जीवन मिशन (JJM) के माध्यम से ग्रामीण भारत में परिवर्तनकारी बदलाव: मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन।" जैसी परियोजनाएँ प्रमुख हैं। दिसंबर 2025 को समाप्त तिमाही में ANSI ने अपने शोध कार्यों और सहयोगात्मक पहलों में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की है।

चल रही परियोजनाओं—"स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ एवं सफल वृद्धावस्था की खोज (EHSAS) तथा "कृषि पद्धतियों में परिवर्तन का ग्रामीण स्वास्थ्य पर प्रभाव: महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में एक अध्ययन" में विशेष प्रगति हुई है। EHSAS परियोजना की टीम ने दिसंबर 2025 में आयोजित इण्डियन एसोसिएशन फॉर द स्टडी ऑफ़ पॉपुलेशन के 46वें वार्षिक सम्मेलन में अपने शोध कार्य को प्रस्तुत किया। वहीं विदर्भ परियोजना की टीम ने प्रारंभिक विश्लेषणात्मक कार्य पूरा कर लिया है और अपने निष्कर्ष बाह्य सलाहकारों के समक्ष प्रस्तुत किए हैं।

अन्य राष्ट्रीय परियोजनाओं में भी महत्वपूर्ण प्रगति हुई। " भारत के पी.वी.टी.जी. के गट माइक्रोबियल जेनॉमिक्स का अध्ययन" परियोजना के अंतर्गत भारत के 13 PVTG समुदायों से प्राप्त नमूनों का जैव-सूचनात्मक (बायोइन्फॉर्मेटिक्स) और सांख्यिकीय विश्लेषण पूरा कर लिया गया है तथा प्रकाशन हेतु एक शोध-पत्र तैयार किया गया है। साथ ही 2025 में अध्यियत समुदायों के लिए अंतिम परियोजना प्रतिवेदन तैयार करने का कार्य जारी है।

"मानव अस्थियों के अध्ययन के आधार पर सिंधु–सरस्वती सभ्यता पर प्राचीन जलवायु के प्रभाव का पुनर्निर्माण", "स्थिर समस्थानिक तथा प्राचीन डीएनए का विश्लेषण" परियोजना के अंतर्गत कालीबंगन और लोथल से प्राप्त कंकाल अवशेषों के पुनर्संयोजन और पुनर्निर्माण का कार्य जारी रहा। साथ ही कालिबंगन नमूनों की सूचीकरण प्रक्रिया, ऑस्टियोमेट्रिक माप, पेलियोपैथोलॉजिकल अवलोकन तथा रूपार और कालिबंगन के नमूनों का फोटोग्राफिक दस्तावेजीकरण भी पूरा किया गया।

ANSI ने UTTARAKHAND में सिकलीगर समुदाय पर नए सहयोग से एक नृवंशविज्ञान (एथ्नोग्राफिक) अध्ययन आरम्भ किया है, जिसे राज्य के सामाजिक कल्याण निदेशालय के सहयोग से संचालित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, प्राचीन कंकाल अवशेषों पर अनुसंधान के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के साथ एक समझौता-ज्ञापन (MOU) भी साइन किया है। अनुसंधान के दायरे को और विस्तृत करने के लिए कई अन्य MOU भी प्रक्रिया में हैं।

मानव संसाधन की गुणवत्ता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से अनुसंधान कर्मियों ने अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और क्षेत्रीय अनुसंधानों में सक्रिय भागीदारी की। सर्वेक्षण के शोधकर्ताओं ने सियोल, नार्थ कोरिया में आयोजित अंतरराष्ट्रीय हृदय-रोग निवारण सम्मेलन में अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। चार शोध कर्मियों ने जापान के स्वास्थ्य, श्रम और कल्याण मंत्रालय द्वारा आयोजित एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया, जिसका उद्देश्य द्वितीय विश्वयुद्ध के जापानी सैनिकों के अवशेषों की खोज और प्रत्यावर्तन से संबंधित प्रक्रियाओं को समझना था। इसके अतिरिक्त, एक शोध कर्मी ने नवंबर 2025 में नागालैंड में जापान एसोसिएशन फॉर रिकवरी एंड रिपैट्रिएशन ऑफ वॉर कैजुअल्टीज़ के प्रतिनिधियों के साथ एक परीक्षण उत्खनन और क्षेत्रीय जाँच में भी भाग लिया।

इसके साथ-साथ ANSI ने विभिन्न विश्वविद्यालयों के इंटर्नों को पुरा-मानवविज्ञान (पैलियोएन्थ्रोपोलॉजी), कंकाल जीवविज्ञान और मानवविज्ञान की अन्य उपविषयों में प्रशिक्षण भी प्रदान किया। दिसंबर 2025 को समाप्त यह तिमाही क्षेत्रीय अध्ययन, सूचना प्रसार और प्रतिवेदन लेखन के क्षेत्र में अत्यंत कारगर रही। आने वाले समय में ANSI और अधिक केंद्रित शोध तथा ज्ञान प्रसार गतिविधियों की दिशा में आगे बढ़ने के लिए आशान्वित है।

एम.शशि कुमार, संयुक्त निदेशक

संस्थागत विशेष

"सर्वेक्षण के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग के शोध कार्मिकों ने 15 अक्टूबर 2025 को नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (NEHU), शिलांग द्वारा आयोजित विशेष व्याख्यान "भारतीय मानवशास्त्र में एल्विन का योगदान: उनकी नृवंशात्मक लेखन पर एक समालोचनात्मक टिप्पणी" में सहभागिता की। इस अवसर पर प्रो.बी. वी.शर्मा, निदेशक भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने "भारतीय मानवविज्ञान में एल्विन का योगदान एवं उनके नृवंशविज्ञानात्मक लेखन पर एक विशेष व्याख्यान दिया।

"कचरे से कला" कार्यशाला – स्वच्छता अभियान 5.0 भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर द्वारा 16–17 अक्टूबर 2025 को "वेस्ट टू आर्ट" विषय पर स्वच्छता 5.0 अभियान के अंतर्गत दो दिवसीय आंतरिक कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन कलाकार निलोफ़र मुनीर के कलात्मक पर्यवेक्षण में हुआ। पहले दिन प्रतिभागियों ने पुराने समाचार पत्रों से पर्यावरण-अनुकूल फाइल कवर तैयार किए, जबकि दूसरे दिन घरेलू अनुपयोगी सामग्री से पतंग शिल्प (KITE CRAFT) का सृजन किया गया। यह पहल रचनात्मक पुनः उपयोग, स्वच्छता, पर्यावरणीय जागरूकता के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य और सकारात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने की दिशा में एक सार्थक कदम रही।

दिनांक 21 अक्टूबर, 2025 को भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केंद्र, देहरादून में "एक दिन, एक घंटा, एक साथ" की थीम के अंतर्गत एक सक्रिय एवं सामूहिक श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन बड़े उत्साह और समर्पण के साथ किया गया। कार्यक्रम के दौरान केंद्र के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उत्साह, एकजुटता और सेवा-भावना के साथ उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर सभागार कक्ष के समीपवर्ती क्षेत्र में श्रमदान किया तथा कार्यालय के भीतरी उद्यान में वृक्षारोपण का कार्य किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन एवं मार्गदर्शन कार्याध्यक्ष डॉ. रविन्द्र कुमार कौशल के प्रेरणादायी नेतृत्व में हुआ।

सर्वेक्षण के मुख्यालय तथा सभी क्षेत्रीय केंद्रों में 27 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन "सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी" विषय के अंतर्गत किया गया। इस कार्यक्रम का आरम्भ 27 अक्टूबर 2025 को सत्य निष्ठा की शपथ के साथ हुआ और सप्ताह-भर सम्बंधित विषय की गतिविधियों का आयोजन हुआ।

संस्थागत विशेष

विश्व-भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन में 27 से 29 नवम्बर 2025 के दौरान “मानव विकास में मानवशास्त्र की व्यवहारिकता (PRAXIS OF ANTHROPOLOGY IN HUMAN DEVELOPMENT)” विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन के संबंध में सर्वेक्षण द्वारा विद्या भवन, विश्व-भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन को सहयोगात्मक शैक्षणिक वित्तीय सहायता प्रदान की गई। उक्त अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण द्वारा राष्ट्रीय अनुसंधान परियोजना “जल जीवन मिशन” (JJM) के माध्यम से ग्रामीण भारत में परिवर्तनकारी बदलाव: मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन” विषय पर एक पैनल चर्चा का आयोजन किया गया।

भारतीय जनसंख्या अध्ययन संघ (INDIAN ASSOCIATION FOR THE STUDY OF POPULATION—IASP) द्वारा अपना 46वां वार्षिक सम्मेलन 27 से 29 नवंबर 2025 तक आयोजित किया गया। यह सम्मेलन भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANSI) तथा राष्ट्रीय एटलस एवं विषयगत मानचित्रण संगठन (NATMO) के सहयोग से, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के मुख्यालय, कोलकाता में संपन्न हुआ। सम्मेलन का मुख्य विषय “जन, ग्रह और समृद्धि (PEOPLE, PLANET, PROSPERITY)” था, जिसके माध्यम से भारत में समावेशी एवं सतत विकास की दिशा में जनसंख्या संबंधी कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित गया। इस सम्मेलन ने जनसंख्या, पर्यावरण और विकास के परस्पर संबंधों पर गंभीर विमर्श के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करेगा।

सर्वेक्षण के मुख्यालय, कोलकाता तथा इसके समस्त क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा 15 नवम्बर 2025 को जनजातीय गौरव दिवस के उपलक्ष्य में निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया:

- जनजातियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम
- “जनजातीय गौरव दिवस: एक नायक की कहानी” विषयक वृत्तचित्र का प्रदर्शन
- “स्वतंत्रता संग्राम में स्वर्गीय कालीबाई का योगदान” विषय पर कठपुतली शो

संस्थागत विशेष

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर द्वारा वर्ष 2025 में 'जनजातीय गौरव दिवस' बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर भारत की जनजातीय समुदायों के साहस, संघर्ष एवं गौरवशाली विरासत के सम्मान में "जनजातीय गौरव दिवस: एक नायक की कहानी" शीर्षक फिल्म का प्रदर्शन किया गया। साथ ही डॉ. कुलशेखर व्यास एवं सुश्री उषा देवेंद्र द्वारा विषय पर ज्ञानवर्धक एवं विचारपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए गए, जिन्होंने जनजातीय इतिहास, संस्कृति एवं योगदान पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण भारतीय लोक कला मंडल द्वारा प्रस्तुत 'कालीबाई' पर आधारित अत्यंत प्रभावशाली एवं मनोहारी कठपुतली नाटक रहा, जिसने उपस्थित दर्शकों को भावविभोर कर दिया। यह आयोजन जनजातीय समाज के अमूल्य योगदान के प्रति सम्मान एवं जागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

वैश्विक आपदा प्रबंधन सम्मेलन 2025 के अंतर्गत आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के अंतिम दिन, दिनांक 30 नवंबर 2025 को समापन सत्र में भी UCOST द्वारा "PRIDE OF INDIA: SCIENCE EXPO 2025" के अंतर्गत "उत्तराखंड का गौरव: नवाचार और देशजता" विषय पर प्रदर्शनी भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, देहरादून द्वारा ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी, देहरादून में लगाई गई। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह की गरिमामय उपस्थिति रही। इस अवसर पर भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, देहरादून की ओर से लगाई गई प्रदर्शनी के लिए प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया।

जापानी युद्धकालीन मृतकों के अवशेषों की खोज, पुनर्प्राप्ति एवं स्वदेश प्रत्यावर्तन विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम- इसके अंतर्गत भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के चार अधिकारियों अधीक्षक मानवविज्ञानी(शा.) डॉ. अभिषिक्ता घोष रॉय, डॉ. कोयल मुखर्जी, मानवविज्ञानी डॉ. एन. सोमोरजीत सिंह मानवविज्ञानी तथा डॉ. मोआजुंगला लोंगकुमेर मानवविज्ञानी द्वारा 10 से 14 नवंबर 2025 के दौरान जापान के स्वास्थ्य, श्रम एवं कल्याण मंत्रालय (MINISTRY OF HEALTH, LABOUR AND WELFARE – MHLW), जापान में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान अवशेषों की वैज्ञानिक पहचान, पुनर्प्राप्ति प्रक्रिया तथा अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रत्यावर्तन से संबंधित विभिन्न तकनीकी एवं व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

संस्थागत विशेष

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण का 80वां स्थापना दिवस 1 दिसंबर 2025 को गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। यह अवसर संस्था की आठ दशकों की शैक्षणिक, शोधपरक एवं राष्ट्रीय योगदान की गौरवशाली यात्रा का साक्षी बना। समारोह के मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. पेदईया, मानव जननिकी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय को आमंत्रित किया गया था। अपने व्याख्यान में उन्होंने मानव जननिकी के क्षेत्र में हो रहे नवीन अनुसंधानों, मानव विविधता के अध्ययन तथा मानवविज्ञान की बदलती भूमिका पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के निदेशक प्रो.बी.वी. शर्मा ने मानवविज्ञान शिक्षण, क्षेत्रीय अनुसंधान एवं जनजातीय समाजों के अध्ययन में सर्वेक्षण द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों का सविस्तार उल्लेख किया। संयुक्त निदेशक डॉ. एम. शशि कुमार ने संस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शैक्षणिक योगदान तथा भारत में मानवविज्ञान के विकास में सर्वेक्षण की भूमिका पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम की एक विशेष उपलब्धि के रूप में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के प्रथम निदेशक डॉ. बी.एस. गुहा के जीवन और कार्यों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म “अनटायरिंग माइंड” का प्रदर्शन किया गया। इस फ़िल्म का निर्देशन सेवा निवृत्त सहायक मानवविज्ञानी डॉ. नबकुमार दुआरी द्वारा किया गया है।

दीपावली भारत की कालातीत सांस्कृतिक निरंतरता, सामूहिक विरासत, विविधता में एकता तथा अज्ञान पर ज्ञान, अंधकार पर प्रकाश और निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक है। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANSI) द्वारा दीपावली को यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में सम्मिलित किए जाने पर यह कार्यक्रम आयोजित किया गया । यह मान्यता भारत की जीवंत सांस्कृतिक परंपराओं और उनकी वैश्विक महत्ता को रेखांकित करती है। इस अवसर पर भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण उन सांस्कृतिक वाहकों, समुदायों एवं परंपराओं को नमन करता है, जो इस जीवित विरासत को पीढ़ी दर पीढ़ी संजोए हुए है।

अनुसंधानिक गतिविधियाँ

भारत के छत्तीसगढ़ राज्य की अंतर-राज्यीय सीमाओं में जातीय समूहों का अध्ययन: पहचान, अन्तः और अंतर -जातीय संबंध और विकासात्मक मुद्दे (तीसरा चरण)

छत्तीसगढ़ राज्य,जो कई राज्यों तथा पहाड़ी और घने वन जैसे भौगोलिक क्षेत्रों से घिरा हुआ है, विभिन्न जनजातीय और जातीय समुदायों के लिए निवास हेतु एक विशिष्ट पर्यावरण निर्मित करता है। इन समुदायों की विशिष्ट संस्कृति,भाषाई पहचान औरजटिल सामाजिक गतिशीलता,सामाजिक वैज्ञानिकों को इनके अध्ययन और उनसे जुड़ने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है।

वर्तमान अध्ययन,"भारत में छत्तीसगढ़ राज्य की सीमाओं पर स्थित जातीय समूह" में छत्तीसगढ़, ओडिशा और झारखंड के नौ जिलों के अंतर्गत स्थित 72 सीमावर्ती गाँवों में पहचान, अंतः-जातीय और अंतः-सामुदायिक संबंधों तथा विकासात्मक चुनौतियों की जाँच की गई। यह अध्ययन भारतीय मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण (AN.S.I.) के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों से प्रशिक्षित विद्वानों की एक अनुसंधान टीम द्वारा वर्ष 2026 में लगभग डेढ़ माह की अवधि में संपन्न हुआ। अध्ययन के अंतर्गत चयनित गाँव राज्य की सीमाओं से 3 से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित थे, जिससे भौगोलिक निकटता से प्रभावित सांस्कृतिक और सामाजिक गतिशीलताओं का एक अनूठा दृष्टिकोण प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन जातीय विविधता की जटिल प्रकृति और इस क्षेत्र के विकास पर उसके प्रभाव को रेखांकित करता है।

इस अध्ययन में छत्तीसगढ़, ओडिशा और झारखंड राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित 70 ग्राम पंचायतों के अंतर्गत 72 गाँवों को शामिल किया गया, जिनका चयन गूगल और GIS मानचित्रों तथा स्थानीय सरकारी अधिकारियों से परामर्श के आधार पर किया गया। अंतर्राज्यीय सीमा के निकट स्थित होने के साथ-साथ ये गाँव जटिल अंतः-जातीय और अंतः-सामुदायिक गतिशीलताओं को भी दर्शाते हैं, जिनमें प्रवासन का इतिहास, सामाजिक पदानुक्रम और सांस्कृतिक परिवर्तन शामिल हैं। अध्ययन में सामुदायिक पहचान, संसाधनों का उपयोग, संस्कृतिकरण (ACCULTURATION), तथा धार्मिक और जीवन-चक्र संबंधी प्रथाओं में हो रहे परिवर्तनों का भी अन्वेषण किया गया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सीमावर्ती क्षेत्रों के सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य की गहरी समझ विकसित करना था।

वर्तमान अध्ययन में छत्तीसगढ़ के 38 गाँवों,ओडिशा के 29 गाँवों और झारखंड के 5 गाँवों का अध्ययन किया गया। छत्तीसगढ़ में यह अध्ययन पाँच जिलों के 11 विकासखंडों के अंतर्गत 37 ग्राम पंचायतों में फैले 38 बहु-जातीय गाँवों को सम्मिलित करता है। सर्वाधिक कुल 16 गाँव महसमुंद जिले से शामिल किए गए, इसके बाद रायगढ़ जिले से 10 गाँव और जशपुर जिले से 7 गाँव को सम्मिलित किया गया जो ओडिशा और झारखंड की सीमाओं से लगे हुए हैं। सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले में 5 गाँवों का अध्ययन किया गया। ऐसा वितरण विभिन्न जातीय संरचनाओं वाले सीमावर्ती क्षेत्रों पर दिए गए विशेष ध्यान को दर्शाता है, जिससे क्षेत्रीय गतिशीलताओं की समग्र समझ प्राप्त की जा सके।

अध्ययन से यह भी पता चला कि छत्तीसगढ़ में कई ऐसे गाँव हैं जहाँ लंबे समय से निवासरत परिवार मौजूद हैं, जिससे ओडिशा और झारखंड की तुलना में अधिक सामाजिक स्थिरता परिलक्षित होती है। ओडिशा में दीर्घकालिक और नए निवासियों का मिश्रण देखने को मिलता है, जबकि झारखंड में मूल निवासी परिवारों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। निवास के ये पैटर्न योजनाओं के निर्माण तथा क्षेत्रीय प्रवासन और बसावट की प्रवृत्तियों को समझने में सहायक हैं। आगे का अनुसंधान सतत आजीविका और सामाजिक एकता को समर्थन देने वाली नीतियों को सुदृढ़ कर सकता है।

अनुसूचित जनजाति (ST) की समान मान्यता से जुड़े आंदोलनों के संदर्भ में संवैधानिक वर्गीकरण में असंगतियाँ विशेषकर छत्तीसगढ़, ओडिशा और झारखंड में समुदायों को प्रभावित करती हैं। विभिन्न नामकरण और राज्य-विशिष्ट श्रेणियाँ बंजारा, चिक और कलंगा जैसे समुदायों को प्रभावित करती हैं। यह स्थिति पहचान और अधिकारों से जुड़े मुद्दों के समाधान के लिए मानकीकृत मान्यता की आवश्यकता को उजागर करती है। इसके अतिरिक्त, अवलोकनों से यह भी स्पष्ट हुआ कि गंभीर जातिगत असमानताएँ सामाजिक बहिष्कार और सामुदायिक तथा धार्मिक स्थलों तक सीमित पहुँच का कारण बनती हैं, जिससे सामाजिक एकीकरण और गरिमा बाधित होती है। इन क्षेत्रों में समावेशन, सामंजस्य और समान विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रणालीगत भेदभाव का समाधान अत्यंत आवश्यक है।

छत्तीसगढ़ की अंतर-राज्यीय सीमाओं में क्षेत्रकार्य के दौरान

छत्तीसगढ़ की अंतर-राज्यीय सीमाओं में क्षेत्रकार्य के दौरान

श्री सुदीप्त कुमार बेहरा(अनुसंधान सहयोगी) एवं अनुसंधान दल

अनुसंधानिक गतिविधियाँ

एहसास(EHSAS)-स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ एवं सफल वृद्धावस्था की खोज: IOT, AI एवं ML के संदर्भ में एपिजेनेटिक्स, डिजिटल विभाजन और ऊर्जा व्यय का एकीकृत अध्ययन

शिलांग में ईएचएसएएस (EHSAS) परियोजना के अध्ययन में तीन प्रमुख मानव वैज्ञानिक पहलू उभरकर सामने आते हैं: इस क्षेत्र का इतिहास जो आदिवासी समुदायों द्वारा निर्मित है, मेघालय की भौगोलिक संरचना (स्थलरूप), तथा छठी अनुसूची और डिजिटल इंडिया परियोजना के संदर्भ में मातृसत्तात्मक वंश प्रणाली। विकास संबंधी मुद्दों के संदर्भ में इस विरोधाभास का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है कि अत्यधिक वर्षा होने के बावजूद शिलांग में मौसमी जल-संकट उत्पन्न होता है, जिससे स्थानीय निवासियों और कृषि दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जो क्षेत्र कभी आत्मनिर्भर था, वहाँ की स्थानीय आबादी अब खाद्य सामग्री के लिए बाहरी स्रोतों पर अत्यधिक निर्भर हो गई है। मातृसत्तात्मक व्यवस्था के अंतर्गत आर्थिक दृष्टिकोण पितृसत्तात्मक व्यवस्था से भिन्न होते हैं, जो विकास रणनीतियों को भी प्रभावित करते हैं। इस संदर्भ में शिलांग स्मार्ट सिटी रूपरेखा के भीतर ईएचएसएएस अध्ययन का विशेष महत्व है। 2011 की जनगणना के अनुसार, मेघालय में तेरह शहरी क्षेत्र हैं, जिनमें से अधिकांश मायलियम (MYLLIEM) ब्लॉक के अंतर्गत आते हैं, जिनमें शिलांग और चेरापूंजी शामिल हैं। शिलांग स्मार्ट सिटी लिमिटेड की स्थापना 22 जनवरी 2019 को की गई थी, जो क्षेत्र के विकास का प्रबंधन करती है। शिलांग को जून 2018 में 100 वें स्मार्ट सिटी के रूप में नामित किया गया था।

अध्ययन से पता चलता है कि शिलांग स्मार्ट सिटी के वरिष्ठ नागरिकों की जीवन गुणवत्ता स्वास्थ्य, पर्यावरण, आधारभूत संरचना तथा सहयोगी तंत्र पर निर्भर करती है। स्मार्ट सिटी परियोजना के अंतर्गत हुए सुधारों के बावजूद, हरित क्षेत्रों के विकास और स्वास्थ्य सेवाओं तक सुगम पहुँच सुनिश्चित करने के लिए आयु-अनुकूल (एज-फ्रेंडली) रणनीतियों की आवश्यकता है। अध्ययन के निष्कर्ष सामाजिक नेटवर्क और जीवन गुणवत्ता के बीच स्पष्ट संबंध दर्शाते हैं। जिन व्यक्तियों के सामाजिक संबंध अधिक सुदृढ़ हैं, वे बेहतर सामाजिक संबंधों और उच्च जीवन गुणवत्ता की रिपोर्ट करते हैं। महिलाओं में कैलोरी सेवन आयु के साथ घटता पाया गया, विशेषकर जहाँ 70 वर्ष की आयु के बाद कैलोरी उपयोग में अधिक गिरावट देखी गई। दोनों लिंगों के अधिकांश व्यक्तियों में सकारात्मक कैलोरी संतुलन पाया गया, जो वजन बढ़ने का कारण बन सकता है। कम वजन (अंडरवेट) के मामले अपेक्षाकृत कम आयु के वरिष्ठ नागरिकों में अधिक पाए गए, जबकि अधिक आयु वर्ग में सामान्य बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) की स्थिति बनी रहती है। सशक्त सामाजिक समर्थन उच्च जीवन गुणवत्ता से संबद्ध पाया गया। मनोवैज्ञानिक कल्याण, सामाजिक संबंध तथा अनुकूल पर्यावरण वे प्रमुख कारक हैं, जो शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन में 60 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के 316 वरिष्ठ नागरिकों को शामिल किया गया। अध्ययन में प्रति 1,000 पुरुषों पर 1,065 महिलाओं का लिंगानुपात पाया गया, जो राष्ट्रीय औसत से थोड़ा बेहतर है। सबसे बड़ा आयु वर्ग 60–64 वर्ष का था, जिसमें 97 प्रतिभागी शामिल थे। डिजिटल उपकरणों तक पहुँच सीमित पाई गई; केवल 29 प्रतिभागी (28.43%) ही इनका उपयोग कर रहे थे, जिसका मुख्य कारण जागरूकता की कमी थी। सामाजिक अलगाव का आकलन LSNS-18 स्कोर के माध्यम से किया गया, जिसके अनुसार 29.41% पुरुष और 37.42% महिलाएँ उच्च जोखिम की श्रेणी में थीं। 80 वर्ष की आयु के बाद विशेषकर महिलाओं में सामाजिक अलगाव में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। समग्र रूप से जीवन गुणवत्ता संतोषजनक पाई गई। सुदृढ़ सामाजिक नेटवर्क मनोवैज्ञानिक कल्याण और स्वास्थ्य को सहयोग प्रदान करते हैं, जिसमें स्मार्ट सिटी में निवास की सुविधाएँ भी सहायक सिद्ध होती हैं।

शिलांग में ईएचएसएएस (EHSAS) परियोजना के अध्ययन में साक्षात्कार के दौरान

स्वस्थ एवं सफल वृद्धावस्था को समझने के उद्देश्य से शोधकर्ता सूचनादाता के मानवमितीय माप ले रहे हैं।

श्री इंद्रनील विश्वास, सहायक मानवविज्ञानी (सांस्कृतिक)

अनुसंधानिक गतिविधियाँ

कृषि पद्धतियों में परिवर्तन का ग्रामीण स्वास्थ्य पर प्रभाव: महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र पर अध्ययन

महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में अनुसंधानकारी टीम।

मध्य-फसल अवधि: पहली चरण की कटाई से गुजरता हुआ कपास का खेत

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, मध्य क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर द्वारा "महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में जनजातियों के बीच कृषि पद्धतियों में परिवर्तन का ग्रामीण स्वास्थ्य पर प्रभाव" शीर्षक से एक क्षेत्रीय अनुसंधान परियोजना संचालित की गई। यह अध्ययन विदर्भ क्षेत्र में एक आधारभूत एवं अन्वेषणात्मक शोध के रूप में प्रारंभ किया गया, जिसका उद्देश्य जनजातीय कृषक समुदायों में बदलती कृषि पद्धतियों और उनसे जुड़ी स्वास्थ्य स्थितियों पर व्यवस्थित साक्ष्य उपलब्ध कराना था। यह अध्ययन भारत में कृषि परिवर्तन के दीर्घकालिक सामाजिक-सांस्कृतिक एवं जैव-स्वास्थ्य प्रभावों पर भविष्य के मानवविज्ञान एवं अंतःविषय अनुसंधानों के लिए एक आधारभूत ढांचा प्रदान करता है।

यह अध्ययन महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के केलापुर तालुका में जैव-सांस्कृतिक एवं महामारी विज्ञान के दृष्टिकोण को अपनाते हुए किया गया। दिसंबर 2024 से जनवरी 2025 के दौरान 25 गाँवों में गहन क्षेत्रीय अध्ययन किया गया। कुल 1,061 जनजातीय परिवारों (4,601 व्यक्तियों) से आंकड़े एकत्र किए गए। अध्ययन में प्रमुख रूप से गोंड, कोलाम (विशेष रूप से संवेदनशील जनजातीय समूह) एवं परधान समुदायों को शामिल किया गया।

कीटनाशकों एवं रासायनिक उर्वरकों के छिड़काव में संलग्न पुरुष किसानों में स्वास्थ्य समस्याओं की चिंताजनक स्थिति सामने आई। 17.4% किसानों ने हल्के कीटनाशक-संबंधी दुष्प्रभावों की सूचना दी, जबकि 34.8% किसान ऐसे लक्षणों से ग्रस्त पाए गए जिनके लिए चिकित्सकीय उपचार आवश्यक था। महिलाओं का रसायनों के प्रति संपर्क मुख्यतः अप्रत्यक्ष था, जो कपास की तुड़ाई एवं छिड़काव के बाद खेतों में कार्य करने से संबंधित था।

हालांकि 66% किसानों ने यह स्वीकार किया कि रासायनिक पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, फिर भी सुरक्षा उपायों का उपयोग अपर्याप्त पाया गया। केवल 42% किसान नियमित रूप से छिड़काव के दौरान मास्क का उपयोग करते हैं, जबकि 60% कभी भी दस्ताने नहीं पहनते। अधिक चिंताजनक तथ्य यह है कि 15% किसानों ने रसायनों के उपयोग के दौरान खाने, पीने या धूम्रपान करने की बात स्वीकार की, और 75% किसान हवा की दिशा में ही छिड़काव करते हैं, जिससे उनका जोखिम और बढ़ जाता है।

अध्ययन में "रोगों का दोहरा बोझ" सामने आया, जिसमें संक्रामक रोगों के साथ-साथ गैर-संचारी रोगों और कृषि-रसायनों से उत्पन्न स्वास्थ्य समस्याओं में वृद्धि देखी गई। हृदय-वाहिका संबंधी रोग प्रमुख स्वास्थ्य समस्या (14.04%) के रूप में उभरे, इसके बाद संक्रामक रोग (10.86%) एवं रसायनों से संबंधित दृष्टि समस्याएँ (6.29%) रहीं। जनजातीय समुदायों में उच्च रक्तचाप एवं मधुमेह जैसे गैर-संचारी रोगों में वृद्धि देखी जा रही है। महिलाओं में गर्भपात का जोखिम 1.75 गुना तथा मृत-शिशु जन्म का जोखिम 2.05 गुना अधिक पाया गया। इसके अतिरिक्त, 30–44 वर्ष आयु वर्ग की 12.3% महिलाओं में समयपूर्व रजोनिवृत्ति देखी गई, जो रोग प्रतिरूपों में जटिल महामारी विज्ञान संक्रमण को दर्शाती है।

विदर्भ के जनजातीय किसानों की मृत्यु-प्रोफ़ाइल में राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रवृत्तियों के साथ कुछ समानताएँ और कुछ भिन्नताएँ पाई गईं। जहाँ हृदय-वाहिका रोग मृत्यु का एक प्रमुख कारण है, वहीं वाहक-जनित रोगों (6.40%) एवं अप्राकृतिक मृत्यु (10.70%) की दर राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है।

आर्थिक दबाव जनजातीय समुदायों की स्वास्थ्य चुनौतियों को और गहरा करता है। 37.32% परिवार भूमिहीन हैं और कृषि मजदूरी पर निर्भर हैं। अधिकांश भूमिधारी परिवारों के पास 1–5 एकड़ की छोटी जोत है। औसत वार्षिक प्रति व्यक्ति आय ₹27,000 है, जो महाराष्ट्र के ग्रामीण औसत से काफी कम है और बढ़ते स्वास्थ्य व्यय को वहन करने की क्षमता को सीमित करती है।

जनजातीय आबादी में स्वास्थ्य-सेवा की प्रवृत्ति बहुआयामी है, जहाँ मामूली बीमारियों के लिए पारंपरिक उपचारकों तथा गंभीर मामलों में सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों पर निर्भरता देखी गई। स्वास्थ्य-सेवा की तलाश अपेक्षाकृत संतोषजनक होने के बावजूद, आधारभूत संरचना की कमी तथा सांस्कृतिक-आर्थिक बाधाएँ स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में अवरोध उत्पन्न करती हैं।

रासायनिक-आधारित कृषि के तीव्र विस्तार ने पर्यावरणीय स्थिरता पर भी गंभीर प्रभाव डाला है। किसानों ने मिट्टी के क्षरण, मिट्टी के सख्त होने, जल-धारण क्षमता में कमी तथा केंचुओं के लुप्त होने जैसी समस्याओं की सूचना दी।

अध्ययन जनजातीय समुदायों पर कृषि परिवर्तनों के स्वास्थ्य प्रभावों से संबंधित महत्वपूर्ण शोध अंतरालों को रेखांकित करता है। यह सुरक्षित कृषि पद्धतियों को अपनाने, रसायनों के उपयोग के प्रति जागरूकता बढ़ाने, ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने तथा जनजातीय समुदायों के लिए सांस्कृतिक रूप से अनुकूल कृषि-स्वास्थ्य हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर बल देता है।

श्री आर. नरसिंहम नायडू, सहायक मानवविज्ञानी (शा.) एवं अनुसंधान दल

क्षेत्रकार्य डायरी

पर्यटन विकास एवं भारतीय सभ्यता की जड़ों के संरक्षण के संदर्भ में कार्यक्रम: हिमालयी सीमावर्ती क्षेत्र पर एक मानववैज्ञानिक अध्ययन

वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम भारत सरकार की एक व्यापक पहल है, जिसका उद्देश्य सीमावर्ती गाँवों का विकास करना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत बुनियादी ढांचे के विकास, आजीविका के अवसरों में वृद्धि तथा ग्रामीण निवासियों के समग्र जीवन स्तर को बेहतर बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया है।

लालुंग खास, जो भोट समुदाय का निवास स्थान है, भारत सरकार की वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम की पायलट परियोजना के अंतर्गत चयनित 17 गाँवों में से एक है। भारतीय मानववैज्ञानिक सर्वेक्षण (ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA) द्वारा इस परियोजना के अध्ययन स्थल भी इसी सूची के आधार पर चुने गए हैं। डेटा संग्रह के लिए लालुंग खास पंचायत के अंतर्गत आने वाले तीन क्षेत्रों—लालुंग खास, रामा और सामदो—का चयन किया गया। अध्ययन जून, 2025 के प्रथम सप्ताह से 25 दिनों की अवधि में किया गया। इन क्षेत्रों का चयन उनकी जातीय संरचना एवं भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए किया गया, जिससे सीमित समय में अध्ययन को व्यवहारिक रूप से संभव बनाया जा सके। लालुंग खास गाँव में किए गए क्षेत्र कार्य में 59 परिवार शामिल थे, जिनकी कुल जनसंख्या 334 थी।

लालुंग खास हिमाचल प्रदेश के स्पीति तहसील में स्थित एक उच्च हिमालयी गाँव है, जो समुद्र तल से लगभग 4,150 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह काजा से लगभग 240 किलोमीटर और मनाली से लगभग 270 किलोमीटर दूर है, तथा इसकी जनसंख्या लगभग 295 है। "लालुंग" शब्द का अर्थ "देवताओं की भूमि" है, जो इसके आध्यात्मिक महत्व को दर्शाता है। स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार, यहाँ एक मठ के पास स्थित एक पवित्र वृक्ष से जुड़ें एक देवता हैं, जिसके रंग में होने वाले परिवर्तन को गाँव के भाग्य का संकेत माना जाता है। वृक्ष का हरा रंग समृद्धि का प्रतीक है, जबकि पीला या भूरा रंग दुर्भाग्य का संकेत माना जाता है।

वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम एवं अन्य आधारभूत सुविधाओं के प्रभाव का आकलन करने हेतु बनाई प्रश्नावली के माध्यम से परिवार के मुखिया से आकड़ेंएकत्रित किये गए। कार्यक्रम के प्रभाव को गहराई और संदर्भ सहित समझने के लिएनृवंशविज्ञान से सम्बंधित साक्षात्कार, प्रमुख सूचनादाताओं से साक्षात्कार तथा सामूहिक चर्चाओं का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त, उन प्रवासी परिवारों के भी साक्षात्कार किए गए, जो पिछले 10 वर्षों से अधिक समय से लालुंग खास में बसे हुए हैं। इसके साथ ही पंचायत स्तर पर वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के अंतर्गत योजनाओं को लागू करने वाले अधिकारियों से भी बातचीत की गई।

क्षेत्रकार्य डायरी

विभिन्न विषयों पर अलग-अलग दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए सामूहिक चर्चाओं का आयोजन किया गया, जैसे विभिन्न समुदायों की सांस्कृतिक विशेषताएँ, महिलाओं का सशक्तिकरण, महिलाओं की आजीविका, शिक्षा तथा लालुंग खास में जीवन को लेकर उच्च विद्यालय के छात्रों के विचार को सामूहिक चर्चा द्वारा जानने का प्रयास किया गया।

यह अध्ययन मानव वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र में रहने वाले समुदायों की सहनशीलता और अनुकूलन क्षमता को उजागर करता है। कठिन मौसमी परिस्थितियों के बावजूद, ये समुदाय पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं के माध्यम से स्वयं को अनुकूलित करते हैं। पारंपरिक निर्माण तकनीकें, जल-साझाकरण की व्यवस्था तथा सतत चराई जैसी प्रथाएँ पर्यावरणीय स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भले ही गाँव वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के अंतर्गत आता हो गाँव वासियों के अनुसार, "सीमा" मात्र एक भौगोलिक रेखा है। उनका सीमा से कोई विशेष भावनात्मक लगाव नहीं है, क्योंकि वास्तविक सीमा गाँव से काफी दूर स्थित है। इसके अतिरिक्त, यद्यपि वे बौद्ध धर्म का पालन करते हैं और तिब्बतियों के साथ नाम और कुछ सांस्कृतिक समानताएँ साझा करते हैं, फिर भी उनकी पहचान भारतीय संस्कृति और राष्ट्र से गहराई से जुड़ी हुई है।

फील्डवर्क के दौरान यह पाया गया कि वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम में ग्रामीणों की भागीदारी से सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अधिकांश ग्रामीण विकास कार्यों में भाग लेने के लिए उत्सुक रहते हैं और गाँव के समग्र विकास हेतु किसी भी प्रकार के सुधार के लिए तैयार हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत गाँव को पानी की टंकी और सौर पैनल जैसी सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं। ग्रामीण इको-टूरिज्म को बढ़ावा देना चाहते हैं, अर्थात वे पर्यटकों का स्वागत करते हैं, लेकिन इस शर्त के साथ कि पर्यटन से पर्यावरण और उनकी पारंपरिक संस्कृति को कोई क्षति न पहुँचे। उदाहरण के तौर पर वे शिमला का उल्लेख करते हैं, जहाँ अत्यधिक पर्यटन ने पर्यावरण और पारंपरिक जीवनशैली को प्रभावित किया है और अधिकांश घर पारंपरिक शैली के नहीं हैं। इसके विपरीत, लालुंग खास के निवासी ऐसे पर्यटकों को पसंद करते हैं जो पर्यावरण और स्थानीय संस्कृति के प्रति संवेदनशील हों, ताकि गाँव की परंपराएँ और सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रह सकें।

कठोर प्राकृतिक परिस्थितियों के बावजूद, यह समुदाय आपसी सहयोग और मजबूत कुटुंबीय संबंधों के माध्यम से समृद्ध जीवन जी रहा है। उनकी कृषि,-चरवाही आधारित अर्थव्यवस्था में कृषि और पशुपालन दोनों शामिल हैं। वे सीढ़ीनुमा खेतों में मटर और आलू जैसी फसलें उगाते हैं तथा याक, गाय और भेड़ों का पालन करते हैं। संसाधनों के कुशल उपयोग में स्वदेशी ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है, और सामाजिक संगठन कुटुंबीय नेटवर्क पर आधारित है। गाँव के बुजुर्ग निर्णय लेने, विवाद निपटाने और अनौपचारिक संस्थाओं के माध्यम से सामाजिक एकता बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं।

ग्राम: लालुंग खास, हिमाचल प्रदेश

टीम लीडर: रोमी आनंद, अनुसन्धान सहयोगी (सांस्कृतिक)

सदस्य: लैशराम बोनिश सिंह, अनुसन्धान सहयोगी (सांस्कृतिक)

सर्वेक्षण के अन्य प्रमुख सहायक गतिविधियाँ

29 अक्टूबर 2025 को भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, शिलांग द्वारा मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले के मावडियांगडियांग ग्राम में "सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी" विषय के अंतर्गत राष्ट्रीय सतर्कता सप्ताह 2025 के आयोजन के उपलक्ष्य में एक जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ग्रामवासियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखने को मिली। उन्होंने अपनी स्थानीय भाषा में सत्यनिष्ठा की शपथ ग्रहण की। अंत में श्री एच. खारलोर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का सफल समापन हुआ।

भारतीय खान ब्यूरो (INDIAN BUREAU OF MINES - IBM) द्वारा भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA - ANSI) के सहयोग से 'राष्ट्रीय कर्मयोगी कार्यक्रम' के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 7 नवम्बर 2025 को सर्वेक्षण के मुख्यालय, कोलकाता में किया गया। इस कार्यशाला में दोनों संस्थानों के अधिकारियों ने सहभागिता की।

संविधान दिवस जिसे हर साल 26 नवंबर को भारत के संविधान को अपनाने और नागरिकों के बीच संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। इस मौके पर सर्वेक्षण मुख्यालय सहित सभी क्षेत्रीय केन्द्रों के अधिकारी एवं कर्मचारी संविधान की प्रस्तावना को पढ़ने एवं इसमें अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाने हेतु एकत्रित हुए I

इस सर्वेक्षण के अंडमान एवं निकोबार क्षेत्रीय केंद्र, श्री विजयपुरम के शोध कार्मिकों ने 26 एवं 27 नवम्बर 2025 को आयोजित आइलैंड ट्राइबल फेस्टिवल में सहभागिता की।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, उत्तर-पश्चिम क्षेत्रीय केंद्र, देहरादून में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के अंतर्गत सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा का आयोजन 31 अक्टूबर 2025 को किया गया. इस अवसर पर सभी सदस्यों ने निष्ठा, ईमानदारी एवं पारदर्शिता के साथ कार्य करने तथा भ्रष्टाचार-मुक्त समाज के निर्माण में योगदान देने की शपथ ली। कार्यक्रम का उद्देश्य सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी को बढ़ावा देना और नागरिकों के बीच सतर्कता के महत्व के प्रति जागरूकता फैलाना है। इस अवसर पर केंद्र की कार्यालयाध्यक्ष डॉ. अभिषिक्ता घोष रॉय ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई और सभी से अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी ईमानदारी से करने का आह्वान किया।

इस सर्वेक्षण के दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, मैसूर के एक शोध कार्मिक ने 12 से 15 नवम्बर 2025 के दौरान केरल के कन्नूर विश्वविद्यालय के मानवशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित "मानवशास्त्रीय विमर्श की सीमाएँ" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहभागिता की तथा शोध पत्र प्रस्तुत किया।

सर्वेक्षण में राजभाषा कार्यान्वयन विशेष

दिनांक 23 दिसंबर 2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जगदलपुर (छ.ग.) द्वारा भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, उप क्षेत्रीय केंद्र, जगदलपुर को उत्कृष्ट कार्य निष्पादन तथा नराकास जगदलपुर के संचालन में विशिष्ट योगदान देने हेतु प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुआ।

दिनांक 17 दिसम्बर 2025 को भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर में " हिंदी राजभाषा कार्यान्वयन कार्यशाला" का आयोजन किया गया। कार्यशाला में उपस्थित सभी प्रतिभागियों ने सक्रिय सहभागिता निभाई तथा हिंदी राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु अपने अनुभव एवं विचार साझा किए। कार्यशाला के माध्यम से कार्यालय में हिंदी राजभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ी तथा दैनिक प्रशासनिक कार्यों में इसके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सकारात्मक वातावरण निर्मित हुआ।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, मुख्यालय कोलकाता में कार्मिकों को अपना कार्यालयी कार्य अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित करने में सहयोग करने हेतु "प्रशासनिक शब्दावली/वाक्यांश और राजभाषा संबंधी आवश्यक जानकारी" नामक सहायक पुस्तिका का विमोचन प्रो. बी. वी. शर्मा, निदेशक के कर कमलों से किया गया । पुस्तिका विमोचन के अवसर मुख्य रूप से संयुक्त निदेशक डॉ शशि कुमार, उप निदेशक डॉ अमित घोष, कार्यालय अध्यक्ष डॉ उमेश कुमार, श्री सुदर्शन वैद्य, प्रभारी राज भाषा अधिकारी, डॉ नंदिता साहू, हिन्दी अधिकारी एवं शशिबाला पाठक, कनिष्ठ अनुवादक उपस्थित थे ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1), नागपुर के सदस्य कार्यालयों में वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए सर्वोत्तम राजभाषा कार्यान्वयन हेतु भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, मध्य क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर को प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान केंद्र द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रभावी अनुपालन, निरंतर प्रोत्साहन और विविध राजभाषा गतिविधियों के उत्कृष्ट संचालन का प्रमाण है। इसी अवसर पर राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (क्षे.सं.प्र.), नागपुर द्वारा आयोजित "टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता" में कार्यालय के वरिष्ठ सचिवीय सहायक श्री प्रफुल्ल मोझरकर ने उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए हिंदीतर भाषी वर्ग में चतुर्थ पुरस्कार प्राप्त किया। दोनों सम्मान संस्थान में राजभाषा के संवर्द्धन, उपयोगिता और सतत उन्नयन के प्रयासों को और अधिक सशक्त तथा प्रेरणादायी बनाते हैं।

दिनांक 25/11/25 को सुबह 11.30 बजे मुख्यालय एवं सभी क्षेत्रीय एवं उप क्षेत्रीय केंद्रों के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों के लिए ऑनलाइन तिमाही हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय "संसदीय राजभाषा निरीक्षण प्रश्नावली को कैसे भरे" था। इस में वक्ता के रूप में उदयपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव श्री गिरिराज पालीवाल को आमंत्रित किया गया था। स्वागत संबोधन प्रभारी अधिकारी (राज भाषा) श्री सुदर्शन वैद्य ने किया। कार्यशाला में निदेशक प्रो . बी.वी. मुख्य रूप से उपस्थित थे और उन्होंने सभी हिंदी में प्रशिक्षित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना कार्य हिंदी में करने के आदेश दिए।

आंगा देव

आंगा देव एक कुल देवता हैं जिन्हें छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के रायकोट क्षेत्र की मुरिया जनजाति से संकलित किया गया है । आंगा देव की संरचना साल की लकड़ी (शोरिया रोबस्टा) से बनी है। इसे 1977 में संकलित किया गया था। बस्तर की गोंड जनजातियों द्वारा इसकी पूजा की जाती है। इसमें दो समानांतर और काले रंग के लकड़ी के खंभे 'एच' आकार में जुड़े हुए हैं। आंगा देव को गाँव का रक्षक माना जाता है। आंगा देव को मेला, करसाड तथा मढ़ई के दौरान सिराहा द्वारा गाँव से देवताओं के मिलन स्थल तक ले जाया जाता है। प्रत्येक गाँव में आंगा के लिए एक पवित्र स्थान होता है जिसे आंगा गुड़ी कहा जाता है, जो वास्तव में आंगा देव का विश्राम स्थल होता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान लिंगो पेन ने आंगा देव की रचना की थी और हर चार-पाँच साल में एक बार कांकेर जिले के अंतागढ़ ब्लॉक के सेमरगाँव क्षेत्र में 'लिंगो पेन जात्रा' नामक एक विशाल उत्सव आयोजित किया जाता है। यह स्थान लिंगो पेन का जन्मस्थान भी माना जाता है। लिंगो पेन जात्रा में दूर-दूर से ग्रामीण अपने ग्राम देवता के रूप में आंगादेव सहित एकत्रित होते हैं और यह एक दूसरे से मिलने का अवसर होता भी है। इसके अलावा, वे मढ़ई जैसे विभिन्न स्थानीय त्योहारों के दौरान भी एकत्रित होते हैं।

"दुर्लभ संग्रह: बुरज़ाहोम से प्राप्त मानव कपाल, प्रागैतिहासिक शल्य-चिकित्सा का साक्ष्य"

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, मुख्यालय, कोलकाता में स्थित पुरामानव विज्ञान संग्रहालय में बुरज़ाहोम स्थल से उत्खनित एक महिला की खोपड़ी प्रदर्शन हेतु रखी गई है। बुरज़ाहोम कश्मीर घाटी में श्रीनगर से लगभग 10 किमी उत्तर-पूर्व में स्थित है जहाँ उत्तर प्लीस्टोसीन-होलोसीन करेवा निक्षेपों की एक सीढ़ी है। इस स्थल का उत्खनन 1961 से 1968 के बीच हुआ था और यहाँ से विभिन्न सांस्कृतिक चरणों नवपाषाण, नवपाषाण-महापाषाण और प्रारंभिक ऐतिहासिक संस्कृतियों के दस मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं। ट्रेपनेटेड खोपड़ी नवपाषाण काल की है। सी14 डेटिंग से पता चलता है कि ट्रेपनेटेड बुरज़ाहोम खोपड़ी वर्तमान समय से 4300-4000 वर्ष पूर्व के समयकाल की है। खोपड़ी में कई ट्रेपनेशन के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं। कुल मिलाकर, खोपड़ी पर ट्रेपनेशन के 11 प्रयास स्पष्ट हैं। संख्यान और वेबर (2001) के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि ऑपरेशनों की पूरी श्रृंखला कम अंतराल में त्वरित क्रमिक चरणों में की गई थी। प्रदर्शित खोपड़ी में मामूली विकृति (बाईं ओर अतिवृद्धि) पाई गई, जो संभवतः मानसिक रूप से विक्षिप्त, मिर्गी से ग्रस्त या किसी अन्य प्रकार से 'असामान्य' रही होगी। ऐसे लोगों को अधिकांश प्रारंभिक समाजों में श्रद्धा और भय की दृष्टि से देखा जाता था। यह स्पष्ट रूप से चिकित्सा कारणों से एक जीवित व्यक्ति पर की गई शैल्य क्रिया (सर्जरी) का प्रसंग है, जो इस प्रक्रिया के बाद जीवित नहीं रह सकी। यह संभावना है कि खोपड़ी पर विभिन्न व्यास के ड्रिल का उपयोग किया गया होगा, हालांकि बुरज़ाहोम स्थल पर ट्रेपनेशन में उपयोग किए जाने वाले कोई उपकरण नहीं मिले हैं। बसु और पाल (1980) का मानना है कि बुरज़ाहोम में ट्रेपनेशन का एकमात्र उद्देश्य खोपड़ी से ताबीज के लिए गोल आकृतियाँ निकालना था, जिनका उपयोग अनुष्ठान या अन्य मन्नत की भेंट या जादुई-धार्मिक प्रथाओं के लिए किया जाता था। हालांकि, संख्यानऔर वेबर ने तर्क दिया कि बुरज़ाहोम की खोपड़ी के प्रकरण में ट्रेपनेशन एक बहुत ही विस्तृत चिकित्सा-अनुष्ठानिक प्रक्रिया का शल्य चिकित्सा का भाग मात्र हो सकता है, जिसकी केवल ट्रेपनेटेड खोपड़ी ही हमारे पास बची है।

नियुक्तियाँ /पदोन्नति

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण में आये नवनियुक्त कार्मिकों का हार्दिक स्वागत है। इस प्रतिष्ठित संगठन से जुड़ना न केवल एक उपलब्धि है, बल्कि राष्ट्र की ज्ञान-परंपरा और विरासत के संरक्षण में सक्रिय योगदान का अवसर भी है। नवनियुक्त कार्मिकों से अपेक्षा है कि वे संस्थान के उद्देश्यों, मूल्यों और अनुसंधान-परंपराओं को आत्मसात करते हुए अपने कार्य की आरम्भ करें। फील्डवर्क एवं अध्ययन के दौरान स्थानीय समुदायों की संवेदनशीलताओं का सम्मान करें। प्रशासनिक दायित्वों के निर्वहन में पारदर्शिता, समयबद्धता और उत्तरदायित्व बनाए रखें। चूँकि सर्वेक्षण संस्कृति मंत्रालय का अधीनस्थ केन्द्रीय कार्यालय है अतः कार्यालय द्वारा सौंपे गये कार्यों को समय पर निष्ठापूर्वक पूरा करने की अपेक्षा की जाती है। सर्वेक्षण आपके उज्जवल भविष्य की कामना करताहै।

श्री मैनाक चक्रवर्ती
मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक)

श्री देवर्षि पाल
अनुसन्धान सहयोगी(शारीरिक)

श्री बंटी कुमार
अनुसंधान सहयोगी(भाषाविज्ञान))

श्री शुभदीप पॉल
अनुसन्धान सहयोगी(पारिस्थितिकी)

श्री सौरभ वर्मा
अनुसन्धान सहयोगी(सांस्कृतिक)

सुश्री श्रेया राज
अनुसंधान सहयोगी(शारीरिक)

श्रीमती कृष्णा भाटी
अनुसन्धान सहयोगी(पारिस्थितिकी)

सुश्री तान्या,
अनुसन्धान सहयोगी(पारिस्थितिकी)

श्री सुमित गौड
अनुसन्धान सहयोगी(शारीरिक)

श्री अनपलेपू गोपाल कृष्ण
अनुसन्धान सहयोगी(सांस्कृतिक)

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण सभी अधिकारियों को उनकी पदोन्नति पर हार्दिक बधाई देता है। हमें विश्वास है कि आप भविष्य में भी अपनी विद्वता, अनुभव और समर्पण से अनुसंधानिक कार्यों तथा विभिन्न परियोजनाओं में प्रभावी मार्गदर्शन और सक्रिय सहभागिता प्रदान करते रहेंगे।

श्री चन्द्र शेखर रॉय,
सहायक मानवविज्ञानी(शारीरिक)
मुख्यालय कोलकाता

डॉ. वीणा बी. नायर
सहायक मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक),
मैसूरू

श्री राजकुमार
सहायक मानवविज्ञानी(सांस्कृतिक),
शिलांग

श्री किरण उत्तरावल्ली
सहायक मानवविज्ञानी(शारीरिक),
मैसूरू

सेवानिवृति

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, दृश्य मानवविज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रभावशाली डॉक्यूमेंट्री फ़िल्मों के माध्यम से उल्लेखनीय योगदान देने के लिए सहायक मानवविज्ञानी(सां) डॉ. नबकुमार दुआरी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता है। सेवा निवृत्ति के साथ अपने जीवन के नए अध्याय की ओर अग्रसर होते हुए डॉ. दुआरी को हम हार्दिक बधाई देते हैं । अपने कार्य के प्रति उनकी निष्ठा, समर्पण एवं प्रेम सदैव संस्थान के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANSI) में डॉ. नबकुमार दुआरी के विदाई समारोह के दौरान।

कार्यालय के मध्य क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर में कार्यरत कार्यालय अधीक्षक श्री एस.एस. नंदनवार जी के सेवानिवृत्ति के अवसर पर हम उनके दीर्घ, समर्पित एवं अनुकरणीय सेवाकाल के लिए हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने निष्ठा, ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता के साथ कार्यालय के प्रशासनिक दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। कार्यालय के प्रति उनका अमूल्य समय और योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। हम उनके स्वस्थ, सुखमय एवं संतोषपूर्ण जीवन की हार्दिक कामना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (ANSI) में कार्यरत कार्यालय अधीक्षक श्री एस. एस. नंदनवार

संपादक की कलम से

भारत विविधताओं का देश है—विविधताएँ जो भाषा, संस्कृति, परंपरा, जीवन-शैली और सामाजिक संरचनाओं की अद्भुत बहुलता से देश को एक अलग पहचान देती हैं। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA) इसी बहुलता के वैज्ञानिक अध्ययन, संरक्षण और प्रलेखन के लिए समर्पित एक अग्रणी राष्ट्रीय संस्थान है। कोलकाता स्थित मुख्यालय से संचालित यह संस्थान देश के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान के माध्यम से मानव समाज की जैविक, सांस्कृतिक और सामाजिक विशेषताओं को समझने का कार्य कर रहा है।

वर्तमान समय में जब वैश्वीकरण और तीव्र शहरीकरण के प्रभाव से पारंपरिक समुदायों की पहचान और ज्ञान-प्रणालियाँ प्रभावित हो रही हैं, तब मानव विज्ञान का महत्व और बढ़ जाता है। हमारा उद्देश्य केवल अध्ययन करना नहीं, बल्कि समुदायों के साथ संवाद स्थापित कर उनके पारंपरिक ज्ञान, लोक-परंपराओं और जीवन-पद्धतियों को सम्मानपूर्वक प्रलेखित करना भी है। अनुसंधान, प्रकाशन, संग्रहालय गतिविधियों और शैक्षणिक सहयोग के माध्यम से सर्वेक्षण समाज और अकादमिक जगत के बीच सेतु का कार्य कर रहा है।

यह न्यूज़लेटर संस्थान की विविध शोध-परियोजनाओं, क्षेत्रीय गतिविधियों, संगोष्ठियों और उपलब्धियों के त्रैमासिक कार्यों का प्रतिबिंब है। हमें विश्वास है कि ये अंक मानवविज्ञान के नवीन आयामों से पाठकों को परिचित कराएगा और शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस न्यूज़ लेटर के माध्यम से हम सब मिलकर भारत की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और वैज्ञानिक अध्ययन की इस सतत यात्रा को और सशक्त बनायेंगे।

नंदिता साहू
हिंदी अधिकारी

संपादक मंडल

मार्गदर्शक
श्री सुदर्शन वैद्य, संग्रहालय पालक

संपादन एवं तकनीकी सहयोग
श्रीमती शशि बाला पाठक, कनिष्ठ अनुवादक, सुश्री सोहिनी घोष,वरिष्ठ अनुसंधान अध्ययेता

आवरण पृष्ठ: आंध्र प्रदेश की बोंडो जनजाति की महिला

छायाचित्र श्रेय: श्री श्रीदाम कुंडू, फोटोग्राफर

अंतिम पृष्ठ : हिमाचल के स्पीति के क्षेत्र में

छायाचित्र श्रेय: श्री रोमी आनंद, अनुसन्धान सहयोगी (सांस्कृतिक)

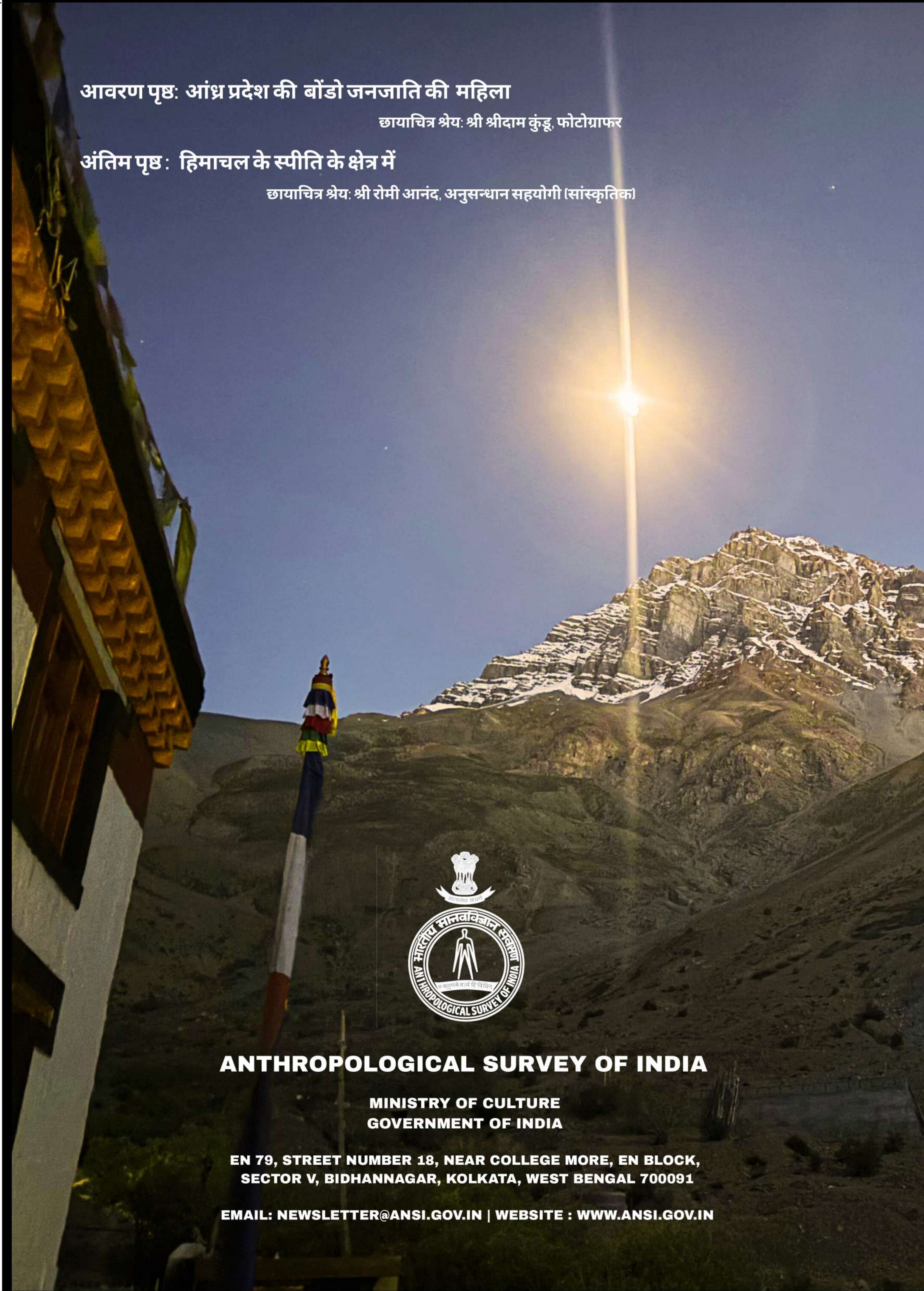

ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA

MINISTRY OF CULTURE
GOVERNMENT OF INDIA

EN 79, STREET NUMBER 18, NEAR COLLEGE MORE, EN BLOCK,
SECTOR V, BIDHANNAGAR, KOLKATA, WEST BENGAL 700091

EMAIL: NEWSLETTER@ANSI.GOV.IN | WEBSITE : WWW.ANSI.GOV.IN